



ISSN 0973-2616

प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का गृह बुलेटिन

वर्ष 10 अंक 9

www.csir.res.in

फरवरी 2022

लद्दाख में स्थापित होगी देश की पहली 'नाइट स्काई सैक्चुररी'



भारत सरकार का विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) लद्दाख में देश का पहला 'नाइट स्काई

सैक्चुररी' स्थापित कर रहा है। चांगथांग वन्यजीव अभयारण्य के हिस्से के रूप में लद्दाख के हनले में प्रस्तावित इस 'डार्क स्काई

रिजर्व' की स्थापना का कार्य आगामी तीन महीने में पूरा कर लिया जाएगा। यह दूरबीन द्वारा आकाश के तारों को निहारने से

जुड़े खगोल-पर्यटन को बढ़ावा देगा और ऑप्टिकल, इन्फ्रा-रेड और गामा-रे टेलीस्कोप से लैस दुनिया के सबसे ऊंचे स्थानों में से एक होगा।

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पृथ्वी विज्ञान (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह ने यह जानकारी हाल में लद्दाख के उपराज्यपाल आर. के. माथुर के साथ मुलाकात करने के बाद दी है। डॉ सिंह ने बताया कि केन्द्र शासित प्रदेश प्रशासन, लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषद (एलएचडीसी), लेह और भारतीय भौतिकी संस्थान (आईआईए) के बीच 'डार्क स्पेस रिजर्व' की स्थापना के लिए एक त्रिपक्षीय समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। उन्होंने कहा कि यहाँ पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधारित उपायों के माध्यम से स्थानीय पर्यटन और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में मदद करने वाली गतिविधियां आयोजित की जाएंगी।

डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा कि सभी हितधारक संयुक्त रूप से अवांछित प्रकाश-प्रदूषण और रोशनी से रात्रिकालीन आकाश के संरक्षण की दिशा में कार्य करेंगे, जो वैज्ञानिक अवलोकन और प्राकृतिक आकाश की स्थिति के लिए एक गंभीर चुनौती है। हनले इस परियोजना के लिए सबसे उपयुक्त है, क्योंकि यह लद्दाख के सबसे ठंडे रेगिस्तानी क्षेत्र में स्थित है, और किसी भी प्रकार की मानवीय बाधाओं से दूर है। यहाँ पूरे साल आसमान साफ रहता है और शुष्क मौसम की स्थिति रहती है।

उन्होंने यह भी कहा कि केंद्रीय चमड़ा अनुसंधानसंस्थान (सीएलआरआई), चेन्नई के वैज्ञानिकों और अधिकारियों का एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मंडल सीएलआरआई की एक क्षेत्रीय शाखा स्थापित करने की संभावनाओं का पता लगाने के लिए इस

वर्ष के अंत तक लद्दाख का दौरा करेगा, क्योंकि यह केन्द्र शासित प्रदेश चमड़ा अनुसंधान और उद्योग के लिए जानवरों की व्यापक किस्मों के मामले में समृद्ध है, जिससे चमड़ा आधारित जैव-अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा।

उन्होंने कहा कि लद्दाख के चरथांग में 4 लाख से अधिक पशु हैं, जिनमें मुख्य रूप से पश्मीना बकरियां शामिल हैं। इसके अलावा, यहाँ भेड़ और याक भी पाए जाते हैं। उन्होंने प्रसिद्ध पश्मीना बकरियों के उपचार के लिए लेह और कारगिल में दो-दो प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए सीएसआईआर की सराहना की।

डॉ जितेंद्र सिंह ने "लेह बेरी" का वाणिज्यिक वृक्षारोपण शुरू करने का निर्णय लेने के लिए लद्दाख प्रशासन की सराहना की, जो इस क्षेत्र में लोकप्रिय हो रहा है। केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय से सम्बद्ध वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) 'लेह बेरी' को बढ़ावा दे रहा है। 'लेह बेरी' 'ठंडे रेगिस्तानी क्षेत्र का एक विशेष खाद्य उत्पाद है, और व्यापक उद्यमिता के साथ-साथ आजीविका का साधन है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की 2018 की लद्दाख यात्रा के दृष्टिकोण के अनुसार, स्थानीय उद्यमियों को जैम, जूस, हर्बल चाय, विटामिन-सी पूरक उत्पाद, स्वास्थ्य पेय, क्रीम, तेल, साबुन जैसे जैविक रूप से बने लगभग 100 से अधिक उत्पादों की खेती, प्रसंस्करण और विपणन के माध्यम से लाभकारी रोजगार प्रदान किया जाएगा।



लद्दाख के उपराज्यपाल आर. के. माथुर ने बताया कि 15 हजार फीट से अधिक की ऊंचाई पर तीन औषधीय पौधों की व्यावसायिक खेती इस वसंत ऋतु में शुरू हो जाएगी। इस सम्बन्ध में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा जारी वक्तव्य में बताया गया है कि इन औषधीय पौधों में 'संजीवनी बूटी' भी शामिल है, जिसे स्थानीय रूप से "सोला" के रूप में जाना जाता है। इस औषधि में बहुत अधिक जीवनरक्षक और चिकित्सीय गुण विद्यमान होते हैं।

डॉ जितेंद्र सिंह ने लद्दाख के उपराज्यपाल को बताया कि अगले वर्ष से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, लद्दाख शिक्षा मेले के लिए एक अलग और विशाल मंडप की स्थापना करेगा, जो एक वार्षिक सुविधा होगी। उन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा युवाओं के रोजगार कौशल पर विशेष ध्यान देने के साथ सही विषयों के चयन, छात्रवृत्ति, करियर मार्गदर्शन, कौशल विकास और प्रशिक्षण में सक्रिय रूप से भाग लेने की बात कही।

केंद्रीय मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह द्वारा देश भर में फैले 37 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं/संस्थानों में से प्रत्येक में तकनीकी सफलताओं और नवाचारों को प्रदर्शित करने के लिए “एक सप्ताह एक प्रयोगशाला” अभियान की घोषणा



M- ft ræ fl g ने पहले वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद नेतृत्व सम्मेलन (सीएसआईआर लीडरशिप मीट) को संबोधित किया जिसमें देश भर में सभी 37 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के निदेशकों और विभागाध्यक्षों ने भाग लिया।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि ड्रोन, हेलीबोर्न प्रौद्योगिकी, अत्याधुनिक सीवेज सफाई मशीनों, अरोमा मिशन जैसे क्षेत्रों में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की सफलताओं ने अनुसंधान, शिक्षा और उद्योग के बीच सार्थक और समान हिस्सेदारी की साझेदारी विकसित करने के लिए बड़े अवसर खोले हैं।

4,500 से अधिक सीएसआईआर वैज्ञानिकों के पूल के साथ वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद को

अमृत काल में नवाचारों के वैश्विक केंद्रों के रूप में उभरने के लिए रीओरिएंट और रीवाइटेलाइज करना होगा

डॉ. जितेंद्र सिंह, केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री एवं पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री जो कि सीएसआईआर, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के उपाध्यक्ष भी हैं, ने आज देश भर में फैली 37 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं/संस्थानों में से प्रत्येक में तकनीकी सफलताओं और नवाचार प्रदर्शन के लिए “एक सप्ताह एक प्रयोगशाला (वन वीक वन लैब)” विषय पर आधारित अभियान की घोषणा की।

देश भर की सभी 37 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के निदेशकों और

विभागाध्यक्षों के पहले वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद नेतृत्व सम्मेलन (सीएसआईआर लीडरशिप मीट) को संबोधित करते हुए, डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि सीएसआईआर की विरासत इसकी कई राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं और संस्थानों के संचयी योगदान द्वारा बनी है। उन्होंने आगे कहा कि सीएसआईआर की प्रत्येक प्रयोगशाला अद्वितीय है और जीनोमिक्स से भूविज्ञान, सामग्री प्रौद्योगिकी से सूक्ष्मजैविक (माइक्रोबियल) प्रौद्योगिकी और भोजन से ईंधन जैसे विविध क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखती है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने यह भी याद किया कि कैसे पिछले साल कोविड की वैश्विक महामारी के दौरान प्रयोगशालाएँ एक साथ आईं और उन्होंने कई ऐसी तकनीकों का विकास किया जिससे भारत को कोविड के खिलाफ लड़ाई में सहायता मिली। उन्होंने

कहा कि अब बड़े पैमाने पर जनसंचार अभियान के माध्यम से प्रत्येक प्रयोगशाला की सफलता की कहानियों को देश के सामने लाया जाना चाहिए।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने आगे कहा कि ड्रोन, हेलीबॉर्न प्रौद्योगिकी, अत्याधुनिक सीवेज सफाई मशीनों, अरोमा मिशन जैसे क्षेत्रों में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की सफलताओं ने अनुसंधान, शिक्षा और उद्योग के बीच सार्थक और समान हिस्सेदारी वाला साझेदारी विकसित करने के लिए बड़े अवसर खोले हैं।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि अत्याधुनिक हेली-बॉर्न सर्वेक्षण तकनीक को जल शक्ति मंत्रालय के सहयोग से पिछले साल राजस्थान, गुजरात, पंजाब और हरियाणा राज्यों में लागू किया गया था और यह प्रयास प्रधानमंत्री के स्वप्न और उद्देश्य "हर घर नल से जल" को सकारात्मक योगदान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसी तरह से सीएसआईआर द्वारा व्यापक प्रसार के लिए विकसित मशीनीकृत सीवेज सफाई प्रणाली स्वच्छ भारत मिशन के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करेगी।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को पिछले 8 वर्षों में बढ़ा हुआ बजट और एक बहुत ही विशेष प्रोत्साहन मिला है तथा वैज्ञानिक गतिविधियों एवं प्रयासों को अब विशेष महत्व दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सभी वैज्ञानिक नवाचारों का अंतिम लक्ष्य आम आदमी के लिए "जीवन में सुगमता" लाना है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने 4,500 से अधिक सीएसआईआर वैज्ञानिकों के एक पूल को अमृत काल में नवाचारों के वैश्विक केंद्रों के रूप में उभरने के लिए संगठन को



पुनर्भविन्यासित (रीओरिएंट) और पुनर्जीवित (रीवाइटेलाइज) करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को ऊर्जा संक्रमण में हाइड्रोजन, कार्बन कैप्चर और उसके भंडारण (स्टोरेज), सुलभ सौर ऊर्जा, प्लास्टिक पुनर्चक्रण (रीसाइक्लिंग) और सस्ते ऊर्जा भंडारण जैसे क्षेत्रों में उभरते नवाचारों पर ध्यान देना चाहिए।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) और जैव-प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) की तर्ज पर प्रगति मैदान में एक विज्ञान मंडप होना चाहिए। उन्होंने सीएसआईआर के महानिदेशक से देश के विभिन्न हिस्सों में सीएसआईआर-प्रदर्शनियां (एक्सपो) आयोजित करने का भी आग्रह किया, ताकि अन्य हितधारकों के अलावा विभिन्न राज्यों और उद्योगों द्वारा अपने तकनीकी कौशल का प्रदर्शन किया जा सके।

अपने संबोधन के अंत में डॉ. जितेंद्र सिंह ने वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) एवं सभी विज्ञान विभागों को अगले दस वर्षों में भारत को तकनीकी उपलब्धियों और नवाचारों में विश्व स्तर पर अग्रणी देश बनाने के लिए आवश्यक

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (एस एंड टी) नवाचारों का पता लगाने के लिए कहा। मंत्री महोदय ने कहा कि "हमें अपनी महत्वाकांक्षा को भारत में सर्वश्रेष्ठ होने तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए बल्कि हमें दुनिया में सर्वश्रेष्ठ होना चाहिए क्योंकि भारत युवाओं के जनसांख्यिकीय लाभांश से परिपूर्ण है और वे सही प्रशिक्षण और प्रेरणा के साथ किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं।"

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की महानिदेशक (डीजी) डॉ. एन. कलैसेल्वी ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि 21वीं शताब्दी भारत की और भारत के लिए होने जा रही है। उन्होंने कहा कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी समुदाय को इस अवसर पर आगे आना चाहिए और भारत को वैश्विक क्षेत्र में एक सम्मानित नाम बनाने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। कई स्मारणीय गतिविधियों और पुरस्कारों की घोषणा के साथ वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) शीघ्र ही अपनी स्थापना के आठ दशकों का उत्सव मनाएगी।

डॉ. राधा रंगराजन ने सीएसआईआर-केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान, लखनऊ की निदेशक का कार्यभार संभाला

डॉ राधा रंगराजन ने आज सीएसआईआर-केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान, लखनऊ की निदेशक के रूप में कार्यभार संभाला।

डॉ राधा रंगराजन पिछले दो दशकों से सार्वजनिक स्वास्थ्य (पब्लिक हेल्थ) क्षेत्र में ट्रांसलेशनल रिसर्च एवं उत्पाद विकास (प्रोडक्ट डेवलपमेंट) में सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। उन्होंने, अकादमिक, स्टार्ट-अप एवं उद्योग के बीच इंटरफेज पर बारीकी से काम करते हुए, औषधि अनुसंधान, निदान एवं चिकित्सा उपकरणों जैसे क्षेत्रों में अपने अनुभव को विस्तार दिया है।

वर्ष 2003 और वर्ष 2009 के बीच, डॉ रंगराजन ने हैदराबाद में डॉ रेड्डीज लैबोरेटरीज के ड्रग डिस्कवरी डिवीजन में काम किया। उन्होंने अनेक भूमिकाओं में काम करते हुए, विभिन्न चिकित्सीय क्षेत्रों जैसे कि संक्रमण-रोधी, मधुमेह और हृदय रोग के लिए प्रारंभिक चरण के अणुओं को सफलतापूर्वक विकसित किया।

इसके बाद, उन्होंने विटस फार्मा की सह-स्थापना की, जो एक औषधि अनुसंधान एवं विकास कंपनी है, तथा संक्रमणों के इलाज के लिए नए उपचारों पर केंद्रित है। उन्होंने सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप) का लाभ उठाते हुए, एक अत्यधिक कुशल नवाचार मंच तैयार किया जिसके माध्यम से अनेक महत्वपूर्ण नवाचारी औषधियाँ, पेटेंट एवं निदान (डायग्नोस्टिक्स) तैयार करने में मदद मिली। वर्ष 2020 में, उन्होंने एक चिकित्सा उपकरण कंपनी हेल्थ क्यूब्ड (HealthCubed)



में मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी की भूमिका निभाई, जहां उन्होंने उत्पाद विकास, नैदानिक सत्यापन, निर्माण और नियामक मामलों संबंधी जिम्मेदारी निभाई।

डॉ रंगराजन मेडटेक इनक्यूबेटर, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, हैदराबाद (IIIT&H) की संचालन परिषद की सदस्य हैं, साथ ही आईहब-डेटा (IHub & Data / II IT & H) की वैज्ञानिक कार्यक्रम समिति की सदस्य एवं NIDHI सीड सपोर्ट सिस्टम, अटल इनक्यूबेशन सेंटर-सीसीएमबी की चयन समिति की सदस्य एवं डीएसटी इंस्पायर फ़ैकल्टी फेलो के लिए चयन समिति की सदस्य भी हैं।

डॉ रंगराजन ने वर्ष 2019 में फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज (फिक्की) का उत्कृष्टता-महिला पुरस्कार प्राप्त किया। उन्हें 2017 में भारत के उभरते उद्यमियों को पहचान (मान्यता) दिलाने की प्रधान मंत्री मोदी की "चैंपियंस ऑफ चेंज" के लिए चुना गया था। उन्होंने

विटस फार्मा टीम नेतृत्व किया जिसने 2016 में लॉन्गीट्यूड प्राइज कमेटी, यूके का डिस्कवरी अवार्ड प्राप्त किया और 2016 में इकोनॉमिक टाइम्स स्टार्ट अप अवार्ड्स (वुमन अहेड कैटेगरी) में फाइनलिस्ट भी रहीं।

डॉ रंगराजन ने स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की, मिशिगन विश्वविद्यालय एन आर्बर से मास्टर ऑफ साइंस की डिग्री, एवं रॉकफेलर यूनिवर्सिटी, न्यूयॉर्क से पीएच.डी.की उपाधि प्राप्त की है।

ये हार्वर्ड स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ में पोस्ट डॉक्टरल फेलो रहीं। इस अवसर पर अपने संदेश में, सीडीआरआई की अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष और हैदराबाद विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान के प्रतिष्ठित प्रोफेसर, प्रो गोवर्धन मेहता ने कहा, "सीडीआरआई, नई निदेशक, डॉ राधा रंगराजन, जिन्होंने अकादमिक और उद्योग में व्यापक रूप से काम किया है, के

साथ अनुसंधान के भविष्य और प्रासंगिक क्षेत्रों की पहचान और नई प्रतिभाओं को शामिल करने के साथ एक प्रभावशाली पथ को पार करने के लिए तैयार है, एवं सीडीआरआई को आने वाले रोमांचकरी एवं उत्पादक समय के लिए शुभकामनाएं दी।”

इस अवसर पर, डॉ. श्रीनिवास रेड्डी, निदेशक, सीएसआईआर-आईआईसीटी और

निदेशक, अतिरिक्त प्रभार, सीएसआईआर-सीडीआरआई और सीएसआईआर-आईआईआईएम जम्मू ने स्वागत करते हुए और कार्यभार सौंपते हुए कहा, “डॉ. राधा रंगराजन, फार्मा उद्योग और शिक्षा दोनों ही क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखती हैं। इसलिए वह सीएसआईआर-सीडीआरआई जैसे संस्थान जो सभी के लिए किफायती

स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराने की दिशा में कार्यरत है, के लिए एक उपलब्धि साबित होंगी।”

इस अवसर पर सभी वैज्ञानिकों, प्रशासनिक कर्मचारियों और छात्रों ने शुभकामनाएं दीं और डॉ. रंगराजन के सक्षम नेतृत्व के लिए एकजुटता दिखाई और हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया।

सीएसआईआर-सीडीआरआई, लखनऊ में आयुष चिकित्सकों एवं शोधकर्ताओं के लिए दक्षता विकास एवं सतत चिकित्सा शिक्षा प्रशिक्षण हेतु कार्यक्रम शुरू

1 k; &vk/kfjr fpfdRl k vls i kjã fj d mi pkjã dk rdZ ær mi ; ks
l e; dh elæ g%M- l Ûkxjh

केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ने 12 से 17 सितंबर, 2022 तक आयुष शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के लिए दक्षता विकास एवं सतत चिकित्सा शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम की मेजबानी की।

डॉ. रितु त्रिवेदी (वैज्ञानिक समन्वयक) और डॉ. आनंद कुलकर्णी (कार्यकारी समन्वयक) ने पूरे भारत से आए 28 प्रतिभागियों का स्वागत किया जो पारंपरिक औषधीय के विशेषज्ञ हैं। डॉ. राधा रंगराजन, निदेशक, सीएसआईआर-सीडीआरआई ने पारंपरिक चिकित्सा और आधुनिक अनुसंधान के विशेषज्ञों को एक छत के नीचे लाने के लिए कार्यक्रम की सराहना की।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सीएसआईआर-पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (सीएसआईआर-टीकेडीएल) यूनिट की प्रमुख डॉ. विश्वजननी सत्तीगेरी ने बताया कि स्वास्थ्य और कल्याण के क्षेत्र में हजारों वर्षों से तथा अनेक पीढ़ियों से चली आ रही बहुमूल्य परम्पराएँ एवं

संस्कृति भारत की समृद्ध विरासत का हिस्सा हैं। वर्तमान में हमारे पारंपरिक हर्बल तथा हर्ब एवं खनिज फॉर्मूलेशन का एक बड़ा हिस्सा भोजन या आहार पूरक के रूप में चिह्नित किया जा रहा है, और उनमें से अधिकतर ओवर-द-काउंटर (ओटीसी) उत्पाद हैं।

बदलते समय और उन्नत प्रौद्योगिकियों के साथ तारतम्य मिलते हुए, हम अब काफी हद तक साक्ष्य-आधारित चिकित्सा और पारंपरिक उपचारों के तर्कसंगत उपयोग पर निर्भर हो चुके हैं। न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी व्यापक स्वीकृति प्रदान करने के लिए आधुनिक विज्ञान और आधुनिक चिकित्सा आधारित पारंपरिक दवाओं के अनुसंधान एवं विकास की परिकल्पना की गई है। कार्यक्रम में आगे बोलते हुए उन्होंने बताया कि नए अनुसंधान एवं विकास के संदर्भ में बौद्धिक सम्पदा (आईपीआर) संरक्षण के मामले सामने आते हैं। पारंपरिक ज्ञान से संबंधित आईपीआर पहलू क्या हैं? स्वास्थ्य सेवा में पारंपरिक और एकीकृत अनुसंधान

से संबंधित सीएसआईआर की गतिविधियों और पारंपरिक ज्ञान के आईपीआर पहलुओं को किस प्रकार से शामिल किया गया है इस बारे में भी उन्होंने विस्तार से चर्चा की।

यह छह दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम पारंपरिक चिकित्सा चिकित्सकों को आधुनिक औषधि अनुसंधान एवं विकास के बारे में जागरूक करने के लिए बनाया गया है।

दवाओं की खोज के विभिन्न पहलुओं के अनुसार सत्रों को विभाजित किया गया है, उदाहरण के लिए, प्राकृतिक उत्पाद रसायन विज्ञान, धातु और कीटनाशक विषाक्तता, फाइटोकेमिकल विश्लेषण, फार्मास्यूटिक्स और फार्माकोकाइनेटिक्स, नियामक विष विज्ञान अध्ययन, आदि। कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीडीआरआई में हर्बेरियम, जीएलपी प्रयोगशालाओं के साथ-साथ सीएसआईआर-एनबीआरआई और सीएसआईआर-सीआईएमएपी का दौरा भी किया गया।

अल्जाइमर के निदान के लिए शोधकर्ताओं ने विकसित किया नया परीक्षण



अल्जाइमर एंड रिलेटेड डिसऑर्डर सोसाइटी ऑफ इंडिया (एआरडीएसआई) की 'डिमेंशिया इंडिया रिपोर्ट' के अनुसार, वर्ष 2030 तक लगभग 76 लाख भारतीय अल्जाइमर और अन्य डिमेंशिया के रोग से पीड़ित होंगे। माना जाता है कि अल्जाइमर रोग मस्तिष्क की कोशिकाओं में और उसके आसपास प्लाक के असामान्य निर्माण के कारण होता है। प्लाक छोटे प्रोटीन (पेप्टाइड) के समुच्चय होते हैं, जिन्हें एमिलॉयड-बीटा (A β) कहा जाता है।

अल्जाइमर रोग के निदान में संज्ञानात्मक कार्यों, मस्तिष्क के आकार और संरचना का अवलोकन SPECT, PET एवं MRI स्कैन और एमिलॉयड प्लाक (Amyloid plaque) की पहचान महत्वपूर्ण

है। स्पाइनल टैप (Spinal Tap) के माध्यम से प्रमस्तिष्क मेरु द्रव (Cerebrospinal) से निकालकर या फिर पीईटी स्कैन करके एमिलॉयड प्लाक की पहचान की जाती है। अल्जाइमर की विश्वसनीय पहचान करने में सक्षम होते हुए भी यह विधि अपेक्षाकृत महँगी है, और इसमें चीरफाड़ की आवश्यकता होती है।

एक ताजा अध्ययन में भारतीय शोधकर्ताओं को एक नया चीरफाड़ रहित और प्रभावी फ्लोरोसेंट आणविक परीक्षण विधि विकसित करने में सफलता मिली है। यह संयुक्त अध्ययन भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) जोधपुर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) खड़गपुर, और वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की कोलकाता

स्थित घटक प्रयोगशाला-भारतीय रासायनिक जीव विज्ञान संस्थान (आईआईसीबी) के सहयोग से किया गया है। यह अध्ययन, शोध पत्रिका 'एसीएस केमिकल न्यूरोसाइंस' में प्रकाशित किया गया है।

आईआईटी जोधपुर से जुड़े शोधकर्ता प्रोफेसर डॉ सुरजीत घोष ने कहा, "ऑप्टिकल इमेजिंग विधियाँ, जिनमें ऊतकों और वांछित अणुओं को लक्षित करने के लिए फ्लोरोसेंट या रंग-आधारित रसायनों का उपयोग करते हैं, उन्हें बायोमेडिकल क्षेत्र में बेहतर नैदानिक तकनीक माना जाता है।" वह बताते हैं कि फ्लोरोसेंस जाँच रेडियोधर्मी रसायनों या महँगे उपकरणों की अनुपस्थिति में त्वरित और सुरक्षित विश्लेषणात्मक संवेदन का मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

लाहौल घाटी के किसानों को सशक्त बना रहा है सीएसआईआर-आईएचबीटी



सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर ने 19 सितंबर 2022 को उच्च तुंगता जीव विज्ञान केन्द्र (सेंटर फॉर हाई एल्टीट्यूड बायोलॉजी), रिबलिंग, केलांग, जिला लाहौल और स्पीति में तांदी पंचायत के किसानों को सशक्त बनाने के लिए "कम्पोस्टा बूस्टर सहित हींग, केसर, पुष्प रोपण सामग्री वितरण" कार्यक्रम का आयोजन किया। डॉ. राम लाल मारकंडा, माननीय तकनीकी शिक्षा मंत्री, हिमाचल प्रदेश सरकार इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

श्री शमशेर सिंह, सदस्य आदिवासी सलाहकार समिति, हिमाचल प्रदेश के साथ-साथ राज्य सरकार के विभिन्न विभागों के अधिकारी भी इस अवसर पर उनके साथ उपस्थित थे। कार्यक्रम में टांडी पंचायत के कई आदिवासी किसानों, महिलाओं, बेरोजगार युवाओं ने भाग लिया। इसके अलावा मार्बल व मलंग गांवों के प्रधान व महिला मंडलों के प्रतिनिधि भी कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे।

माननीय मंत्री डॉ. राम लाल मारकंडा ने कार्यक्रम के दौरान किसानों और स्थानीय लोगों को संबोधित किया। उन्होंने आदिवासी लोगों के कल्याण के लिए सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की और किसानों और बेरोजगार युवाओं को संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों से लाभ उठाने के लिए कहा। अपने संबोधन में उन्होंने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बदलने के लिए सीएसआईआर-आईएचबीटी के सहयोग से उद्यमिता विकास और स्टार्ट-अप पर बल दिया। उन्होंने जिले में फलोरीकल्चर क्लस्टर बनाने, और जगला और शांशा में कोल्ड स्टोरेज सुविधा की स्थापना के लिए संस्थान द्वारा की गई पहल की भी सराहना की। माननीय मंत्री जी ने कार्यक्रम के दौरान क्षेत्र के निवासियों को हींग के पौधे, केसर के घनकन्द, फूलों के बीज और कम्पोस्ट बूस्टर का वितरण भी किया।

इस अवसर पर डॉ. संजय कुमार, निदेशक सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर ने

माननीय मंत्री का स्वागत करते हुए संस्थान द्वारा किए गए अनुसंधान और प्रसार गतिविधियों से उन्हें अवगत कराया।

उन्होंने उच्च तुंगता वाले क्षेत्रों में किसानों की आय बढ़ाने के लिए हींग, केसर और व्यावसायिक पुष्प खेती और इन फसलों के क्षेत्र-विस्तार के लिए संस्थान द्वारा किए गए प्रयासों पर प्रकाश डाला।

डॉ. कुमार ने फसल उत्पादकता में सुधार के लिए संस्थान द्वारा विकसित नॉयट सॉयल के क्षरण से खाद बनाने की तकनीक को भी सांझा किया।

समारोह में संस्थान के वैज्ञानिकों के एक समूह डॉ. राकेश कुमार, डॉ. अशोक यादव, डॉ. अमित चावला और डॉ. अशोक सिंह ने हींग, केसर और व्यावसायिक पुष्प फसलों की खेती के लिए उनके द्वारा विकसित "कृषि तकनीक के पैकेज" पर हितधारकों के साथ विस्तृत चर्चा की।

भारतीय पारंपरिक ज्ञान के एक पूर्व कला डेटाबेस, पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) तक पहुंच पर इंस्टिट्यूट नेशनल डे ला प्रोप्रिएट इंस्टीट्यूट, फ्रांस तथा वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के बीच सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर

इंस्टिट्यूट नेशनल डे ला प्रोप्रिएट इंस्टीट्यूट (आईएनपीआई) नेशनल इंस्टीट्यूट प्रॉपर्टी इंस्टीट्यूट), फ्रांस तथा वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) तक पहुंच (एक्सेस) पर सहयोग के लिए डॉ. एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर तथा सचिव, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) की गरिमामयी उपस्थिति में एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। समझौते का आदान-प्रदान श्री सेबेस्टियन कोनन, भारत के क्षेत्रीय आईपी काउंसलर और डॉ. विश्वजननी जे सत्तीगेरी, वैज्ञानिक-एच और प्रमुख, सीएसआईआर-टीकेडीएल यूनिट द्वारा किया गया था। इस समझौते के माध्यम से, आईएनपीआई फ्रांस को पेटेंट अनुदान प्रक्रिया के प्रयोजनों के लिए भारतीय पारंपरिक ज्ञान से संबंधित पूर्व कला की जांच करने के लिए संपूर्ण टीडीकेएल डेटाबेस तक पहुंच मिल जाती है।

इस अवसर पर अपने सम्बोधन में, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की महानिदेशक ने पारंपरिक ज्ञान के क्षेत्र में फ्रांस के साथ सहयोग का स्वागत किया।

उन्होंने आगामी स्वास्थ्य देखभाल चुनौतियों के लिए ठोस प्रयासों को प्रोत्साहित किया। श्री कॉनन ने सहयोग के लिए भारत को धन्यवाद देते हुए कहा कि टीकेडीएल डेटाबेस न केवल



आईएनपीआई के लिए बल्कि फ्रांस में पारंपरिक औद्योगिक संस्थाओं के लिए भी एक महत्वपूर्ण साधन होगा। उन्होंने कहा कि फ्रांस पारंपरिक क्षेत्रों में वैज्ञानिक गतिविधियों के लिए सीएसआईआर के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए भी तत्पर है।

आईएनपीआई, फ्रांस के साथ टीकेडीएल तक पहुंच (एक्सेस) समझौते पर हस्ताक्षर होना बौद्धिक संपदा अधिकारों के साथ-साथ फ्रांस और भारत के बीच पारंपरिक ज्ञान के क्षेत्र में एक नई साझेदारी तथा आपसी सहयोग की शुरुआत का प्रतीक है।

पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) के बारे में पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) का डेटाबेस, दुनिया भर में अपनी तरह का पहला है और इसे वर्ष 2001 में भारत सरकार द्वारा सीएसआईआर एवं आयुष मंत्रालय के बीच सहयोग के माध्यम से स्थापित किया गया था। टीकेडीएल का मुख्य उद्देश्य

भारतीय पारंपरिक ज्ञान (टीके) पर पेटेंट की गलत स्वीकृति को रोकने के साथ ही देश के पारंपरिक ज्ञान के दुरुपयोग पर रोक लगाना है। वर्तमान में, टीकेडीएल में आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध, और सोवा रिग्पा जैसी भारतीय चिकित्सा प्रणालियों के 4.2 लाख से अधिक फॉर्मूलेशन और तकनीकों के साथ-साथ पारंपरिक ग्रंथों से योग की जानकारी है। विविध भाषाओं और विषय क्षेत्रों से पारम्परिक ज्ञान सम्बन्धी जानकारी को आधुनिक शब्दावली के साथ सह संबद्ध मूल्यवर्धित जानकारी में स्थानांतरित किया जाता है।

पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) की जानकारी अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, जापानी और स्पेनिश सहित पांच अंतरराष्ट्रीय भाषाओं के डिजिटल प्रारूप और पेटेंट परीक्षकों द्वारा आसानी से समझने योग्य प्रारूप में प्रस्तुत की जाती है। मौजूदा स्वीकृतियों के अनुसार, टीकेडीएल का डेटाबेस पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) तक पहुंच

समझौते (एक्सेस एग्रीमेंट) के माध्यम से केवल पेटेंट कार्यालयों के लिए उपलब्ध है।

डेनिश पेटेंट और ट्रेडमार्क कार्यालय के साथ इस सहयोग से अब टीकेडीएल डेटाबेस तक पहुंच रखने वाले दुनिया भर

में पेटेंट कार्यालयों की संख्या बढ़कर पंद्रह हो गई है। पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) ऐसे पारंपरिक ज्ञान के रक्षात्मक संरक्षण में एक वैश्विक बेंचमार्क है जो अपनी विरासत के किसी भी संभावित दुरुपयोग के विरुद्ध भारत के हितों की

रक्षा करने में सफल रहा है। टीकेडीएल डेटाबेस से प्रस्तुत पूर्व कला साक्ष्य के आधार पर दुनिया भर में 265 से अधिक पेटेंट आवेदनों को निरस्त करने, संशोधित करने, उन्हें वापस लेने या त्यागने के साथ इसका प्रभाव महत्वपूर्ण रहा है।

सीएसआईआर-सीरी में हिंदी सप्ताह एवं हिन्दी दिवस 2022 का आयोजन

सीएसआईआर-केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी), पिलानी में दिनांक 7-13 सितंबर, 2022 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। सप्ताह पर्यन्त विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

हिंदी सप्ताह का विधिवत शुभारंभ 7 सितंबर, 2022 को डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ।

समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह हिंदी दिवस के अवसर पर 14 सितंबर, 2022 को आयोजित किया गया। यह संपूर्ण कार्यक्रम संस्थान के निदेशक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डॉ पी सी पंचारिया के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। सप्ताह के दौरान संस्थान के सभागार में आयोजित प्रतियोगिताओं एवं अन्य कार्यक्रमों में सहकर्मियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में निदेशक महोदय द्वारा राजभाषा संदर्शिका 2021-22 का विमोचन किया गया तथा प्रतियोगिताओं के विजेताओं सहित संस्थान में लागू राजभाषा प्रोत्साहन योजनाओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया तथा हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले अनुभागों/प्रभागों को राजभाषा



चल वैजयंती प्रदान की गई।

mn?kkVu l ekjkg

हिंदी सप्ताह का शुभारंभ दिनांक 7 सितंबर, 2022 को हुआ। संस्थान के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने दीप प्रज्वलन कर सप्ताह का विधिवत शुभारंभ किया।

इस अवसर पर हिंदी सप्ताह आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ अभिजीत कर्माकर, वित्त एवं लेखा नियंत्रक श्री जय प्रकाश इन्दौरा, प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण सहित संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य, वरिष्ठ वैज्ञानिकगण,

अधिकारीगण एवं सहकर्मी उपस्थित थे।

संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि हिंदी न केवल हमारी राजभाषा है अपितु पूरे देश की सर्वमान्य संपर्क भाषा भी है। विगत कुछ समय से देश-विदेश में हिंदी का उपयोग और प्रतिष्ठा बढ़ी है। हिंदी की समावेशी प्रकृति की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि जिस प्रकार हिंदी ने अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को स्वीकार कर अपना प्रसार बढ़ाया है उसी प्रकार हमें भी जीवन में समावेशी बनते हुए निरंतर आगे बढ़ना चाहिए।



अपने संबोधन में उन्होंने हिंदी की विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला। संस्थान में प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के उपयोग की सराहना करते हुए उन्होंने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भी हिंदी का उपयोग बढ़ाने पर बल दिया। संबोधन के अंत में उन्होंने सभी सहकर्मियों से अधिकाधिक संख्या में प्रतियोगिताओं में सम्मिलित होने का आह्वान किया।

हिंदी सप्ताह आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ अभिजीत कर्माकर, मुख्य वैज्ञानिक ने सप्ताह पर्यन्त एवं पूर्व में आयोजित की गई प्रतियोगिताओं एवं अन्य राजभाषा गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने माननीय केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी के हिंदी दिवस संदेश के मुख्य बिंदुओं को उद्धृत किया। अपने संबोधन में उन्होंने सहकर्मियों से अपील की कि भय व संकोच को त्याग कर अपने सरकारी और निजी कार्यों में हिंदी

का अधिकाधिक उपयोग करें। कार्यक्रम का संचालन आयोजन के संयोजक श्री रमेश बौरा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने किया। उन्होंने निदेशक डॉ पी सी पंचारिया एवं उपस्थित अधिकारियों व सहकर्मियों का औपचारिक स्वागत किया। सत्र के अंत में प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उद्घाटन सत्र का समापन राष्ट्र गान से हुआ।

हिंदी सप्ताह की अवधि के दौरान तथा वर्षपर्यन्त सभी सहकर्मियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। **fgahfnol , oai jLdkj forj. kl ekjkg** हिंदी सप्ताह का समापन 14 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ। हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह में संस्थान के निदेशक डॉ पंचारिया ने हिंदी प्रतियोगिताओं के सभी विजेताओं

को पुरस्कृत किया। संस्थान में लागू राजभाषा प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत भी सहकर्मियों को पुरस्कृत किया गया। हिंदी में सर्वाधिक एवं विशिष्ट कार्य करने वाले प्रशासनिक, तकनीकी एवं वैज्ञानिक अनुभागों/प्रभागों को राजभाषा चल वैजयंती प्रदान की गई। प्रशासनिक वर्ग में वित्त एवं लेखा अनुभाग तथा तकनीकी वर्ग में ज्ञान संसाधन केंद्र तथा वैज्ञानिक वर्ग में पीएमईबीडी प्रभाग को राजभाषा चल वैजयंती प्रदान की गई। साथ ही गतवर्ष केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली के भाषा शिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत हिंदी प्रबोध परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले सहकर्मियों को भी प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

पुरस्कार वितरण समारोह में हिंदी सप्ताह आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ अभिजीत कर्माकर, प्रशासन नियंत्रक



श्री जय शंकर शरण, वित्त एवं लेखा नियंत्रक श्री जय प्रकाश इन्दौरा सहित संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य, वरिष्ठ वैज्ञानिकगण, अधिकारीगण एवं सहकर्मी उपस्थित थे।

डॉ पी सी पंचारिया ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका और इसके योगदान की चर्चा की। उन्होंने हिंदी के प्रभाव और महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यद्यपि भारत बहुभाषी देश है परंतु हिंदी की लोकप्रियता, पहचान और बोलने-समझने वालों की संख्या के आधार पर इसे ही संविधान निर्माताओं ने राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया।

उन्होंने बताया कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोने में हिंदी की बड़ी भूमिका रही है। हिंदी दिवस के इतिहास पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हम सभी को अपनी भाषा के इतिहास की जानकारी भी होनी चाहिए। डॉ पंचारिया ने विज्ञान

और तकनीकी के साथ-साथ संस्थान में प्रतियोगिताओं के आयोजन में भी नवाचार लाने पर बल दिया। अंत में उन्होंने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए सभी प्रतिभागियों को अपने प्रदर्शन के साथ-साथ दैनिक कार्यालयी कार्यों में और अधिक सुधार लाने का आह्वान किया।

जय शंकर शरण, वित्त एवं लेखा नियंत्रक

हिंदी दिवस समारोह के दौरान संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने संस्थान के राजभाषा कार्यकलापों से संबंधित राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा तैयार की गई वार्षिक पत्रिका "राजभाषा संदर्शिका 2021-22" का विमोचन भी किया।

इस अवसर पर उनके साथ एवं हिंदी सप्ताह आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ अभिजीत कर्माकर, मुख्य वैज्ञानिक तथा प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण भी उपस्थित थे। डॉ पी सी पंचारिया ने इस प्रकाशन के लिए राजभाषा प्रकोष्ठ की सराहना की।

जय शंकर शरण, वित्त एवं लेखा नियंत्रक

संस्थान में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए लागू की गई राजभाषा चल वैजयंती योजना के विजेता अनुभागों/प्रभागों को भी इस अवसर पर निम्नानुसार चल वैजयंती एवं प्रमाण पत्र भेंट किए गए :

जय शंकर शरण, वित्त एवं लेखा नियंत्रक इस वर्ग में हिन्दी में सर्वाधिक/विशिष्ट कार्य करने के लिए वित्त एवं लेखा अनुभाग को प्रमाण पत्र सहित राजभाषा चल वैजयंती भेंट की गई। श्री जय प्रकाश इंदौरा, वित्त एवं लेखा नियंत्रक ने अनुभाग की पूरी टीम के साथ पुरस्कार प्राप्त किया।

जय शंकर शरण, वित्त एवं लेखा नियंत्रक इस वर्ग में हिन्दी में सर्वाधिक/विशिष्ट कार्य करने के लिए ज्ञान संसाधन केंद्र (पुस्तकालय) को प्रमाण पत्र सहित राजभाषा चल वैजयंती भेंट की गई। डॉ अभिजीत कर्माकर, मुख्य वैज्ञानिक ने पुस्तकालय की पूरी टीम के साथ पुरस्कार प्राप्त किया।

इस वर्ग में हिन्दी में सर्वाधिक/विशिष्ट कार्य करने के लिए परियोजना मॉनीटरन एवं मूल्यांकन तथा व्यवसाय संवर्धन (पीएमईबीडी) प्रभाग को प्रमाणपत्र सहित राजभाषा चल वैजयंती भेंट की गई।

श्री प्रमोद कुमार तँवर, प्रधान वैज्ञानिक ने प्रभाग की पूरी टीम के साथ पुरस्कार प्राप्त किया।

संस्थान में राजभाषा के प्रचार प्रसार के लिए लागू पाँच प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत अगस्त 2021 से जुलाई 2022 की

अवधि के दौरान अपना दैनिक कामकाज हिंदी में करने के लिए 57 सहकर्मियों को पुरस्कृत किया गया।

हिंदी दिवस समारोह का संचालन वरिष्ठ हिंदी अधिकारी श्री रमेश बौरा ने किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए उन्होंने बताया कि लगभग इसी अवधि में देशभर के केंद्रीय कार्यालयों एवं अन्य संस्थाओं में अपनी-अपनी सुविधानुसार हिंदी सप्ताह, हिंदी पखवाड़ा, हिंदी माह आदि कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उन्होंने कहा कि संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा पूर्व में लिए गए निर्णय के अनुपालन में संस्थान

में विगत अनेक वर्षों से हिंदी सप्ताह से पूर्व लगभग प्रतिमाह हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

अंत में प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण ने अपनी विशिष्ट शैली में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया के सतत मार्गदर्शन हेतु आभार व्यक्त किया तथा सभी अधिकारियों, प्रतियोगिताओं के निर्णायकों व संचालकों सहित सभी प्रतिभागियों को आयोजन को सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्र गान से हुआ।

सीएसआईआर मुख्यालय में हिंदी सप्ताह के आयोजन की संक्षिप्त रिपोर्ट

सीएसआईआर मुख्यालय में दिनांक 16.09.2022 से 23.09.2022 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। दिनांक 16.09.2022 को हिंदी सप्ताह का प्रारंभ शांति स्वरूप भटनागर सभागार परिषद मुख्यालय में हास्य कवि सम्मेलन तथा कविता पाठ प्रतियोगिता से किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आर. पी. सिंह, प्रमुख आईएमडी ने की और अध्यक्षीय उद्बोधन के बाद एक स्वरचित कविता सुनाकर कार्यक्रम का प्रारंभ किया। कविता पाठ प्रतियोगिता में परिषद मुख्यालय में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। आमंत्रित कवियों श्री दीपक गुप्ता और श्री विनोद कुमार पाण्डेय ने अपनी हास्य विनोद परिपूर्ण कविताओं से कार्यक्रम को रसमय बना दिया तथा काव्य पाठ प्रतियोगिता के



निर्णायकों की भूमिका भी निभाई।

हिंदी सप्ताह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया:

काव्य पाठ, निबंध, शब्दावली/हिंदी व्यवहार (भाषांतरण), टिप्पण/प्रारूपण, वाक (वाद-विवाद) एवं स्लोगन (स्वरचित) जिसमें परिषद के अधिकारियों/कर्मचारियों

ने बढ़चढ़ कर प्रतिभागिता की।

दिनांक 23.09.2022 को हिंदी सप्ताह के समापन के अवसर पर संयुक्त सचिव (प्रशा.) की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के डीन (योजना) एवं भारत सरकार के शिक्षा राज्य मंत्री के सलाहकार

प्रो. (डॉ.) निरंजन कुमार ने राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में हिंदी की भूमिका विषय पर अपना वक्तव्य दिया। डॉ. निरंजन ने इतिहास, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और संस्कृति को समेटते हुए हिंदी की भूमिका पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात विविध प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के नामों की घोषणा की गई।

इसके बाद श्री महेन्द्र कुमार,

संयुक्त सचिव (प्रशा.) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में प्रतिभागिता करने हेतु प्रसन्नता व्यक्त की।

उन्होंने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए उनके सारगर्भित वक्तव्य हेतु आभार प्रकट किया और हिंदी में भावाभिव्यक्ति की सरलता और सुगमता पर बल देते हुए सभी से आग्रह किया कि अपना अधिकाधिक दैनिक

सरकारी कार्य मौलिक रूप से हिंदी में करें।

कार्यक्रम का संचालन हिंदी अधिकारी सुश्री वंदिता ने किया और अंत में हिंदी अधिकारी श्री लालचंद ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया तथा हिंदी सप्ताह के सफल आयोजन हेतु सभी वरिष्ठ अधिकारियों, प्रतिभागियों एवं सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद देने के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा हिमाचल में केसर की खेती को प्रोत्साहन

सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईएचबीटी) पालमपुर ने 28 सितंबर, 2022 को ग्राम पंचायत बड़ाग्रां, तहसील मुलथान, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश में "केसर उत्पादन की उन्नत कृषि प्रौद्योगिकी" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण सह जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

इस अवसर पर माननीय विधान सभा सदस्य श्री मुख्य राज प्रेमी, बैजनाथ विधानसभा क्षेत्र, हिमाचल प्रदेश, बतौर मुख्य अतिथि उपसतिथ थे। श्री. मुख्य राज प्रेमी ने अपने संबोधन में हिमाचल प्रदेश में केसर की खेती और किसानों को समर्थन देने के लिए सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की।

उन्होंने केसर की फसल के महत्व पर जोर दिया और किसानों से इसकी खेती के लिए आगे आने को कहा। इस अवसर पर उन्होंने क्षेत्र के कई किसानों में केसर के घनकन्दों का वितरण भी किया। इस प्रशिक्षण में बेरोजगार युवाओं, पंचायत अधिकारियों और कृषि अधिकारियों सहित कई गांवों के

किसानों (बारागरान, नलहोटा, कोटीकोहड़ राजगुंधा, शासक, कुकडगुंधा) ने भाग लिया।

इसके अलावा भीखम कपूर, भाजपा मंडल अध्यक्ष एवं रमिता देवी, बैजनाथ की महिला मंडल अध्यक्ष भी इस कार्यक्रम के दौरान मौजूद रहे।

डॉ. संजय कुमार, निदेशक, सीएसआईआर-आईएचबीटी ने भी किसानों के साथ अपने विचार साझा किए और उन्हें बताया कि ये संस्थान क्षेत्र में प्रायोगिक स्तर पर केसर की खेती के लिए राज्य के कृषि विभाग के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है।

संस्थान, अक्सर कृषि अधिकारियों के कौशल को उन्नत करने और उच्च मूल्य वाली फसलों के उत्पादन में किसानों को सशक्त बनाने के लिए ऐसे प्रशिक्षण शिविर



आयोजित करता है। जिस से भारत को आत्मनिर्भर बनाने में सहयोग किया जा सके।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ. राकेश कुमार, सीएसआईआर-आईएचबीटी के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक और डॉ. रेणु शर्मा, राज्य कृषि विभाग मुल्तान की विषय विशेषज्ञ ने बुवाई, साइट चयन, गुणवत्ता विश्लेषण, पोषक तत्व प्रबंधन, खरपतवार प्रबंधन सहित कृषि तकनीकों का प्रदर्शन, कीट प्रबंधन, फसलोपरांत पद्धति और केसर का भंडारण का प्रशिक्षण दिया।

सीएसआईआर-निस्पर की लोकप्रिय विज्ञान पत्रिका 'विज्ञान प्रगति' को 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'



सीएसआईआर-निस्पर निदेशक, प्रो. रंजना अग्रवाल ने सूरत राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार ग्रहण किया

सीएसआईआर की लोकप्रिय विज्ञान पत्रिका "विज्ञान प्रगति" ने एक नया इतिहास रच दिया है। इस पत्रिका को राष्ट्रीय राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम स्थान) प्राप्त हुआ है और यह पुरस्कार पंडित दीन दयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम, सूरत में 14-15 सितंबर 2022 के दौरान आयोजित दूसरे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में प्रदान किया गया। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने इस भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जिसे लगभग 9000 दर्शकों ने देखा।

सूरत राजभाषा सम्मेलन में सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) की निदेशक, प्रो. रंजना अग्रवाल ने केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह की उपस्थिति में यह प्रतिष्ठित कीर्ति पुरस्कार ग्रहण किया। गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र भाई पटेल और गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा और श्री निशिथ प्रमाणिक ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

'विज्ञान प्रगति' (हिंदी में एक लोकप्रिय विज्ञान पत्रिका) भारत की सबसे लोकप्रिय

विज्ञान पत्रिकाओं में से एक है। यह बच्चों, शिक्षकों, शोधकर्ताओं और भारत के साथ-साथ दुनिया भर की जनता के बीच लोकप्रिय है। वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने 1952 में इस पत्रिका को प्रकाशित करना शुरू किया। इसमें सात दशकों की विरासत है और इन वर्षों में, इस पत्रिका के पाठक इसमें प्रकाशित सामग्री से प्रेरित हुए हैं। हिन्दी के इस मासिक प्रकाशन में हाल के राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित विकास, खोज, आविष्कार, लेख, फीचर, विज्ञान कथा, विज्ञान कविता,

प्रश्नोत्तरी, साइंटून (विज्ञान कार्टून) और डॉक्यूड्रामा के रूप में तकनीकी प्रगति के बारे में जानकारी दी जाती है।

विज्ञान प्रगति का उद्देश्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी को सरल भाषा में जन-जन तक पहुँचाना है। पत्रिका की विषयवस्तु का उद्देश्य युवाओं में विज्ञान के प्रति जिज्ञासा को जगाना और विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए उनमें रुचि विकसित करने का प्रयास करना है। जो विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लगे हुए हैं, वे विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बारे में प्रामाणिक जानकारी के स्रोत के रूप में इस पत्रिका का उपयोग करें।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 ए पर जोर दिया और कहा कि प्रत्येक नागरिक का मौलिक कर्तव्य है कि वह वैज्ञानिक स्वभाव, अनुसंधान की भावना, मानवतावाद और सुधार के बारे में जानकारी का विस्तार करे। विज्ञान पत्रिकाएं आम आदमी को विज्ञान और प्रौद्योगिकी की जानकारी देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और उनमें वैज्ञानिक स्वभाव का विकास करती हैं।

इस महान अवसर पर सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल ने कहा कि 'विज्ञान प्रगति' को राजभाषा राष्ट्रीय कीर्ति

पुरस्कार सीएसआईआर के साथ-साथ इसके सभी पाठकों, लेखकों और संपादकों का सम्मान है।



पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का उद्देश्य युवाओं में विज्ञान के प्रति जिज्ञासा जगाना

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक
सीएसआईआर समाचार